Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी द्वारा
काशित

आयुर्यज्ञेन कल्पताम्

हितायुः

(केवल पंजीकृत चिकित्सकों के लिये)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रशासित

ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज फार्मेसी, हरिद्वार

की विश्व विख्यात उच्च कोटि की आयुर्वेदिक औषधियों पर सदा भरोसा कर प्रयोग करें।

शरद ऋतु के विशेष उपहार

च्यवन प्राश रसायन

बल वीर्य को बढ़ा सारे परिवार के सुख व स्वास्थ्य के लिए

मूसली पाक

बल वीर्य को बढ़ा कर शक्ति व स्फूर्ति बढ़ाता है।

बादाम पाक

मस्तिष्क व शारीरिक शक्ति के लिए आदर्श टॉनिक।

वसंत कुसुमाकर

(स्वर्ण कस्तूरीयुक्त)

वली पलित रोग, मधुमेह, मेधा एव बीस प्रकार के प्रमेह नष्ट कर शरीर को कान्तिमान बनाता है।

निर्माता: ऋषिकुल आयुर्वेदिक फार्मेसी, हरिद्वार।

"हितायुः" परिवार नव वर्षारम्भ पर अपने प्रिय पाठकों के मंगलमय जीवन की शुभ कामना करता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

04688

वैद्य धर्मदत्त स्मृति संग्रह

हितायुः

(आयुर्वेद अनुसंधानात्मक मासिक)

वर्ष—२ अङ्क—४ मू० ४० पैसे अक्तूबर-नवम्बर-दिसम्बर ७३

इस अंक में :—

संरक्षक: भक्त हंसराज विज, डा० इन्द्रसेन जी एम ए., पी एच.डी.।

[illegible]ल :- वैद्य धर्मदत्त आयुर्वेदाचार्य, भू पू. प्रिंसीपल गुरुकुल काँगड़ी आयु. कालेज।
आचार्य लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी, एम ए. आयुर्वेद भास्कर साहित्याचार्य, आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर।

प्रबन्ध सम्पादक : वैद्य कविराज विजय शास्त्री, बी.ए एम.एस, आयुर्वेदाचार्य

प्रकाशक : योगी फार्मेसी, लक्सर रोड, कनखल-हरिद्वार।

मुद्रित : [illegible]

R530.8,YOG-H
04688

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओम् तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

D
228

संपादकीय

—लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी

अष्टाङ्ग हृदय के उत्तर स्थानान्तर्गत बालायम प्रतिषेधाध्याय में बालशोष, सुखण्डी, इन तीन नामों से बालकों को होने वाले 'सूखा-रोग' का वर्णन आया है। इस प्रकरण में—

अत्यह: स्वप्न शीताम्बु श्लैष्मिक स्तन्य सेविन: ।
शिशो: कफेन रुद्धेषु स्त्रोत: सु रसवाहिषु ॥
अरोचक: प्रतिश्यायो ज्वर: कासश्च जायते ।
कुमार: शुष्यतितत: स्निग्ध शुक्ल मुखेक्षण: ॥

अर्थात दिवास्वापातिशय के कारण शीतक्ष जलपान करने से दूषित दुग्ध पायी शिशु के रस का ही स्त्रोत कफ द्वारा अवरुद्ध हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में अरुचि, प्रतिश्याय, ज्वर, एवं कास की उत्पत्ति होती है। तब, वह शिशु कृशतर होने के कार सूख जाता है और मुख तथा आँखें चिकनी एवं श्वेत होती हैं।

इस रोग में मांस पेशियों के सूख जाने से त्वचा में वलियाँ पड़ जाती है। नितम्ब शुष्क हो जाते हैं। पृष्ठ वंश उभर आता है। ऐसी स्थिति में उक्त नामो से रोग व्यवहृति उपलब्ध होती हैं।

इस रोग की चिकित्सार्थ मष्टयादि घृत शृङ्गयादि घृत पानार्थ और वचादि तैल अभ्यङ्ग = मर्दन में प्रयुक्त होते हैं।

यद्यपि उक्त रोग शरीरिक रोग हैं तथापि शरीर, सम्बद्ध आत्म प्रकृति के क्रियमाण गुणों से अपने को भी रोगी मान बैठता है अतः यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग भौतिक आध्यात्मिक रूप में द्विविध [illegible] नियमों के उलङ्घन के कारण कर्मज होकर—आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक इन त्रयतापों में परिणत हो जाता है।

परन्तु अब तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह रोग विस्तार वादी चीन के चरण चिन्हों का चुम्बन करके विश्व में अपने साम्राज्य की स्थापना में व्यवस्थित होकर सभी रोगों का सम्राट् बनना चाहता है तभी तो विश्व के आधे भाग में अनावृष्टि का दृष्टिपात होते ही सूखा पड़ जाने के कारण सूखारोग को अपनी समृद्धि का संयोग मिल गया है और वह शिशु शरीर के स्वल्पतर प्रदेश से व्याकुल होकर विश्व के विस्तृत प्राङ्गण में खम्भ ठोक कर उतर पड़ा है।

परन्तु उसे यह पता नहीं कि विश्व का यह विस्तृत प्राङ्गण भी बृहद् ब्रह्माण्ड के सन्मुख राई के दाने के बराबर गिना गया है अतः यहाँ भी तुम्हारी दाल गलने वाली नहीं। यहाँ भी इस, शिशु के दिवास्वापातिशय के कारण प्रदूषित वायु के पान से ही कफ स्थानीय जड़ता से ज्ञान जलरूपी रस वाही ज्ञान तन्तु अवरूद्ध हो गये हैं।

परमाणु बमों के और हाइड्रोजन बमों के परीक्षणों से विविध यन्त्रों के दूषित धुवों से, अनेक विध दूषित पदार्थों की गन्धों से, विविध व्यसन सहायक बुद्धि नाशक मादक द्रव्यों के सेवन से जो वायु प्रदूषण बढ़ रहा है उसकी वास्तविक प्रतिक्रिया न कर पाने के कारण विश्व का दिवास्वप्न, जागते हुए भी दिन में सोना ही कहा जायगा।

यह ठीक है कि इस सम्बन्ध में अनेक वैज्ञानिक विद्वान इसकी प्रतिक्रया के सुझाव दे रहे हैं; किन्तु उस पर आचरण की दिशा अभी तक अज्ञात है।

अतः वैदिक युग की ओर लौट कर आयुर्वैदिक पद्धति के बिना अपनाये प्रस्तुत समस्या का समाधान असम्भव है।

परन्तु क्या विश्व का मस्तिष्क इसे स्वीकार करेगा? वह तो आध्यात्मिक वैदिक युग से बहुत दूर निकल कर भौतिक मान्यताओं का उपासक हुआ जा रहा है। तब क्या यह स्वीकार न कर लिया जाये कि उक्त सूखा रोग विश्व के मस्तिष्क में भी प्रविष्ट हो चुका है, और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी सफलता पर वह इठला कर अट्टहास कर रहा है। वायु प्रदूषण के सूक्ष्म प्रभाव ने सूखा रोग के गल प्रदेश में अपनी आयत भुजा डाल कर मानवता की सतत वहन शील सरस धारा को अवरूद्ध करने के लिये निःसन्देह कोई षड्यन्त्र कर लिया है।

नहीं तो सर्वाङ्ग पूर्ण स्थायी चिकित्सा के समुचित आश्रय भूत आयुर्वेद को छोड़ कर अन्य आधुनिक अपूर्ण-चिकित्साओं को अपनाना, स्वास्थ्योपयोगी नियमों की अवहेलना करके कैसे पनप रहा है।

खाद्य पदार्थों में अखाद्य मिश्रण, सार्वजनिक पूजा के पवित्र स्थानों मल मूत्र विसर्जन प्राचीन संस्कृति और सभ्यता की संरक्षणीय कलात्मक कृतियों का विनाश, पूर्वजों की परम्परागत पारस्परिक सम्मान पद्धति के प्रति उद्धत्ता का प्रदर्शन आदि आदि सैंकड़ों दुश्चरण आयुर्वेद में काम-क्रोधादि जन्य विकृति गत अस्वास्थ्य में ही परिगणित है।

बालिकाओं से बलात्कार, मातृशक्ति से खिलवाड़ आदि आचार परम्परा से छेड़खानी भी आयुर्वेद में व्याधि ही मानी गई है। परन्तु इस ओर विश्व का ध्यान इसीलिये आकृष्ट नहीं हो रहा कि उसे कुछ भी समुचित न सोच पाने का सूखा रोग हो गया है।

वस्तुतः इस सूखे रोग का उपचार भी मष्टयादि घृत के समान— यष्टि = दण्ड विधान रूप नियम पर श्रद्धा रूपी घृत का पान और वचादि तैल मर्दन की तरह आयुर्वेदिक परम्परा पर स्निग्ध दृष्टि का दृढ़ता पूर्वक अर्जन जब तक नहीं होगा यह सूखा रोग नहीं जायगा।

"प्रेम एक पावन मन्दिर है,
जहाँ प्रेम, प्रेम की पूजा करता है॥"

—प्रेम प्रताप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गताङ्क से आगे:—

अञ्जन और उसके भेद

डा० सुरेशानन्द थपलियाल अध्यक्ष रस विभाग ऋ. आ. कालेज, हरिद्वार

नीलांजन

यद्यपि चरक सुश्रुतादि ग्रन्थों में इसका नामोलेख नहीं है किन्तु रसरत्न समुच्चय में इसका उल्लेख है। आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार नीलाञ्जन नाग तथा गधक का योगिक है जिसे सीसवलिकेत (Sulphide of lead) या गेलेना कहते हैं। इसका काठिन्य २॥ और विशिष्ट गुरुत्व ७ ६ होता है। यह नीली आभा लिये होता है और पसीने पर काला हो जाता है, इसे भी पूर्वकाल में सौवीराञ्जन के समान ही मानते होंगे ऐसा सम्भव है। यूनानी में इसी को सुरमा कहते हैं, यह बड़े-बड़े टुकड़ों के रूप में प्राप्त होता था। नीलाञ्जन के सम्बन्ध में सरल समुच्चय ग्रन्थकर्ता कहते हैं कि—

नीलांजनं गुरु स्निग्धं-
नेत्रदोषत्रयापहम् ।
रसायनं सुवर्णघ्मं लोह-
मार्दव कारकम् ॥
(र.र.स.अ. ३)

अर्थात् नीलांजन भारी, चिकना नेत्रदोष एवं त्रिदोष हर, रसायन, सुवर्ण को भस्म बनाने में सहायक और अन्य धातुओं को मृदु बनाने वाला है। वास्तव में नाग को गलाकर थोड़ी मात्रा में स्वर्ण में डालने से स्वर्ण कुछ अंश में भस्म रूप होने लगता है, यह सीसे के ही कारण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। अन्य अंजनों की अपेक्षा भारी है और इसी सीसे के कारण अन्य धातुएं मुलायम भी होती हैं। इसमें स्पष्ट है कि यह लेड सल्फाइड "गैलेना" ही है।

****

पुष्पांजन

पुष्पांजन का उल्लेख चरक चि अ. २६ में 'मणय: पौष्पमंजनम्' के रुप में मिलता है। श्री यादव जी त्रिकम जी आचार्य ने अपने रसामृत में पुष्पांजन के पर्याय नाम इस प्रकार दिये हैं—(सं०) पुष्पांजन रीतिज, रीति पुष्य (हिं) जस्ते का फूल। (गु) जसदेना फूल। (फा.) सफेदये काश्गरी और अंग्रेजी में ऑक्साइड आफ जिंक। इनका कथन है कि यह कहीं २ खनिज रूप में भी प्राप्त होता है, यह वास्तव में जस्ते का अग्नि द्वारा बनाया हुआ फूल है। प्राचीन काल में जब तक यशद का उसके खनिजों से भिन्न रूप में ज्ञान नहीं हुआ था तब इसे पीतल या खर्पर से बनाते थे। इसी लिये रस कामधेनु कार लिखते हैं कि "पुष्पांजने पुष्पकेतु: कौसुम रीतिपुष्पकम्" आयुर्वेदिक प्रकाश के उद्धरण से भी यही स्पष्ट होता है यथा—"पुष्पांजन रीतिकिह मिति के चिद्वदन्ति हि" इन प्रणामों से विदित होता है कि पुष्पांजन यशद का फूल है जो यशद को अग्नि पर पिघला कर हवा में भूनने से ऑक्सीजन के सयोग में आकर जिंक ऑक्साइड बनाता है यही प्राक्का लीन पुष्पांजन है। इसका नेत्रों के लिये उपयोग घरों में भी होता है, यह श्वेतवर्ण का स्निग्ध, शीतवीर्य एव सब प्रकार क नेत्र रोगों में प्रयुक्त होने वाला पदार्थ है।

****

रसांजन

रसांजन का प्रयोग यद्यपि चरक सुश्रुतादि काल से ही वाह्य एवं आभ्यन्तर रूप में होता है किन्तु रसांजन क्या है इस सम्बन्ध में इन संहिताओं के व्याख्याकारों में मतभेद है। सुश्रुत संहिता के अंजनादि गण के रसांजन के सम्बन्ध में व्याख्याकार डल्हण द्वारा समुद्धृत अन्य व्याख्याकारों के मत में 'कृष्णपाषाणाकृति' धातु रसांजन तथा दारुहरिद्रा क्वाथ निर्मित रसांजन यह दो प्रकार का रसांजन माना गया है। रसकामधेनु ग्रन्थकर्ता रसांजन के सम्बन्ध में कहते हैं कि—"दार्वीक्वाथमजाक्षीरेपक्वं सान्द्रं रसांजनम्" अर्थात् दारुहरिद्रा काष्ट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बारीक टुकड़े करके क्वाथ बना छानकर घनसत्व बना लेने पर रसांजन बन जाता है। इसका क्वाथ जब गाढ़ा होने लगे तो इसमें अष्टमांश बकरी का दूध डाल देते हैं इसीको रसौत' कहते हैं।

आयुर्वेद प्रकाश ग्रन्थकर्ता रसांजन का निम्नलिखित वर्णन प्रस्तुत करते हैं—

दार्वीक्वाथमजाक्षीर पाद-
पक्वं यदा घनम्।
तदा रसांजन ख्यातं-
नेत्रयो: परमं हितम्॥
तार्क्ष्य जं तार्क्ष्यशैलं-
च रसगर्भरसांजनम्॥

श्लोक के अन्तिम पद से विदित होता है कि प्राचीन काल में तार्क्ष्य नामक पर्वत पर कोई खनिज प्राप्त होता था जिसे रसांजन कहते थे। सुश्रुत चिकित्सा स्थान अ ९ और उत्तरतन्म अ. १२ में भी रसांजन के तार्क्ष्य, तार्क्ष्यशैल तथा रसगर्भ नामो का उल्लेख है सम्भव है प्राचीन व्याख्या कारों ने "कृष्ण-पाषाण कृति" धातु नाम से इसी का उल्लेख किया हो किन्तु अब अप्राप्य होने से दार्वीक्वाथ घनसत्व को ही रसांजन माना जाता है। इस रसांजन का वर्णन इस शास्त्र ग्रन्थों में नहीं होना चाहिये था क्योंकि यह खनिज नहीं है इसीलिये उपरोक्त संभावना अधिक बलवती होती है। इन अंजनों में सौविरांजन स्त्रोतोन्जन तथा नीलांजन का आभ्यन्तर प्रयोग कई रोगों को दूर करने के लिये होता है अत: उपयोगार्थ शोधन कर लेना आश्यक है।

आभ्यान्तर प्रयोग के लिये शुद्ध सौवीरांजन तथा स्त्रोतोन्जन को मधु के साथ चाटकर तण्डुलोदक के अनुपान से देने से रक्त प्रदर नाशक है। परन्तु इनका निरन्तर प्रयोग हानिकारक होता है इसलिये तीन दिन से अधिक नहीं देना चाहिये! अत्यन्त शीतलता के कारण स्त्रियों में वन्ध्यापन हो जाता है अथवा नाग धातु का समास होने से शरीर में संचित नाग विष के लक्षण उत्पन्न होने का भय रहता है। सहित ग्रन्थ चरक में स्त्रोतो जन का प्रयाग आभ्यन्तर रूप में पित्तज छर्दि नाशक एवं रसांजन का प्रयोग रक्त प्रदर कुष्ठ, अर्श तथा पित्तातिसार नाशक बताया है। सुश्रुत संहिता में कुष्ठ रोग में देने का उल्लेख है।

वाह्य प्रयोग में पांचों प्रकार के अजन मुख्यतया नेत्र विकारों जैसे तिमिर रोग, नक्तान्ध, (कफवि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दग्धदृष्टि) पित्तविदग्धदृष्टि (दिनांध कुकूणक, पोथकी, पिल्ल अर्म तथा बालकों के शुक्र रोग नाशार्थ होता है। उपरोक्त पांच प्रकार के अंजनों के अतिरिक्त राजनिघण्टु उद्धारण स्वरूप आयुर्वेद प्रकाश में कुलित्थांजन (वनकुलित्थांजन, चक्षुष्या, चाकसूके वीज) नाम से छठे अंजन का भी उल्लेख है और इसका प्रयोग बालकों के नेत्र रोगों में किया जाता है।

आज कल बाजार में श्वेतवर्ण का परतदार स्फटिक रूप में श्वेत-सुरमा (श्वेतांजन) भी मिलता है किन्तु यह वास्तव में अंजन नहीं है अत: इसका नेत्रों पर प्रयोग भी नहीं होता है। यह तो कैलसियम कार्वोनेट है, यदि इसे घृतकुमारी स्वरस की भावना देकर शरावसम्पुट में रख गजपुट के फूंक दिया जाय तो गोदन्ती भस्म के समान इसका उपयोग किया जा सकता है।

अंजन सत्व पातन

मन:शिला के समान ही अंजनों का सत्व पातन किया जाता है यथा-"सत्वं तेषाशिलासमम्" (अ. प्र.) रस प्रकाश सुधारक ग्रन्थकर्ता भी इसी बात का समर्थन करते हैं जैसे "शिलाया: सत्व वत्सत्व मंजनानां च पातयेत्"

इति

च्यवन प्राश रसायन

जगत प्रसिद्ध आयुर्वेदिक का यह रसायन अपने गुणों के कारण ही घर-२ में उपयोग किया जाता आ रहा है, हमने इसे पूर्ण शास्त्रोक्त विधी से पक्के आमलों, शुद्ध वशलोचन, छोटी इलायची, दशमूल व दुर्लभ अष्टवर्ग शुद्ध मधु आदि-आदि द्वारा बनाते हैं जो भी सज्जन च्यवनप्राश का सेवन कर निराश हो गये हों, उनको हमारा च्यवनप्राश रसायन अवश्य सेबन कर लाभ उठाना चाहिये।

यह वैसे तो सारे शरीर के लिए टॉनिक है पर श्वास प्रणाली (फेफड़े व गले) आदि के रोगों तथा पुरानी खांसी, दमा, क्षय को दूर कर अशोत्तों को शक्ति, रोगियों को निरोग बनाता है, इसके लगातार सेवन से व्यक्ति कभी रोगी नहीं हो सकता, और रोग प्रतिरोधक क्षमता पैदा होती है।

१० ग्राम च्यवन प्राश प्रात: सायं गाय अथवा बकरी के दूध के साथ लेवें या चिकित्सक से परामर्श करें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस पद्धति की टीका में अंजन का सत्व पातन विधान इस प्रकार है कि—

सौवीरं तीक्ष्ण चूर्णं च
मूषायामन्धयेत्समम् ।
हठात्ध्याते पचेत्सत्वं
वरनाग तदुच्यते ।।
(रसपद्धति टीका पृ. ४३)

इस प्रकार अजन रस कामधेनु रसेन्द्र चूडामणि प्रभृति ग्रन्थों में पांच प्रकार का (१) सौवीरांजन (Styulenitis) Sb2S3 (२) स्त्रोतोजंन (Antimoni Shulphid) (३) नीलांजन (PBS) (Galena) Lead Shulphid (४) पुष्पांजन (जिंक ऑक्साइड़) (५) रसांजन हैं, पाठक रसांजन के सम्बन्ध में विशिष्ठ ऊहापोह वैद्य यादव जी त्रिकम जी आचार्य लिखित 'रसामृत' के परिशिष्ट पृ. १३५-१३७ पर देखने का कष्ट करें।

डा० सुरेशानन्द थपलियाल
अध्यक्ष—रस विभाग
ऋ.आ. कालेज

अनूभूत सिद्ध योग--

अर्शीना

बवासीर व भगन्दर की अकसीर आजमूदा दवा है। यह बवासीर व भगन्दर जिन कारणों से होती है उनको दूर करती है। पुरानी कब्ज को भी दूर करती है। इससे दर्द व खून बन्द होकर मस्से नष्ट होते हैं। देश व विदेशों से काफी बड़ी मांग आ रही है।

अर्शीना पिल्ज

२ गोली नित्य प्रात: सायं गाय के मट्ठे दूध अथवा पानी से सेवन करें या चिकित्सक से सलाह करें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गताङ्क से आगे:

आसव निर्माण पर विचारोत्तेजक सामग्री—

आसव निर्माण

आचार्य दीन दयाल विष्ट
आयुर्वेदालंकार
रा० आयु० फार्मेसी माजरा, सिरमौर, हि०प्र०

का कारण मुनक्का या मधुपुष्प जैसे मृदु द्रव्य हैं। क्रियात्मक करने पर तथ्य और भी स्पष्ट रूप से सामने आयेगा।

मेरे विचार से विभिन्न अरिष्टों में आवश्यकतानुसार जल की मात्रा द्विगुण के स्थान पर ड्योढ़ या कम ज्यादा भी की जा सकती है। वास्तव में इस दृष्टि से किस अरिष्ट में क्या परिवर्तन वांछनीय हैं, यह एक उलझन भरा प्रश्न है। इस पर मतभिन्नता हो सकती है। इन सबका अन्तिम निर्णय तो तभी सम्भव हो सकता है, जब आधुनिक ज्ञान से सम्पन्न निर्माता वैद्यों का एक अखिल भारतीय सुदृढ़ संगठन हो और सम्भाषा परिषदों में गम्भीर विचार विमर्श के पश्चात् अन्तिम निर्णय किये जायें, जो सभी निर्माताओं पर अनिवार्य रूप से लागू हों।

विभिन्न प्रकार के घटकों का पूर्ण अंश क्वाथ में आ जाय, इसके लिये एक उत्तम तारीका इस प्रकार हो सकता है। घटकों के छाल या काष्ठ आदि द्रव्यों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लिया जाय, त्रिफला आदि के फलों को ४-६ भागों में तोड़ लिया जाय और हरिद्र, धान्य जीरक आदि द्रव्यों को बारीक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूट लिया जाय। अब उन्हें मिला कर जल में स्विन्न करने के लिए रख छोड़े। पुनः ऊपर से जल नितार कर पृथक कर लें और इसे जीवाणु हीन करने के लिए दो उबाल दे दें। स्विन्न द्रव्यों का क्वाथ कर लें। इसे नितार कर रख लें और पुनः जल डाल कर क्वाथ करें। इस तरह दो या तीन बार पानी डाल कर क्वाथ किया जा सकता है। अब इस सम्पूर्ण क्वाथ्य जल एवं स्विन्न क्रिया से प्राप्त जीवाणु रहित जल को मिला लें। इस सम्पूर्ण की मात्रा निर्दिष्ट अभीष्ट अवशेष क्वाथ के बराबर होनी चाहिये। इस तरह द्रव्यों का पूर्ण कार्यकारी अंश क्वाथ में आ जायेगा और उड़नशील अंश की भी हानि नहीं होगी।

कुछ अरिष्टों के क्वाथ्य द्रव्यों में मुनक्का, मधुपुष्प आदि मृदु द्रव्य होते हैं, इन्हें ज्यादा उबालने की आवश्यकता नहीं होती अपितु मन्द अग्नि पर दो तीन बार क्वाथ करना चाहिये। एक बार क्वाथ करने के पश्चात जल पृथक करलें और पुनः नया जल डाल कर क्वाथ करें इस तरह जब मुनक्कों में मिठास बिल्कुल समाप्त प्रायः हो जाय, तो क्रिया पुनः न दोहरायें। इस दो तीन बार किये क्वाथ को मिला लें। इसमें मुनक्कों का पूर्ण अंश होगा और तीव्र अग्नि संयोग से जो विकृति आ जाती है, वह नहीं होगी।

मेरे विचार से जिनका क्वाथ नहीं बनाया जाता प्रायः उन सभी आसवों के कुछ या आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण घटकों को निर्दिष्ट जल के साथ एक उबाल जरूर दे देना चाहिये। इससे एक तो इनका पर्याप्त अंश आसव द्रव में आ जायेगा और ये सम्पूर्ण द्रव्य एवं जल जीवाणुहीन हो जायेगा। इससे संन्धान काल में अन्य जीवाणुओं के न पनप पाने से विशुद्ध आसवीय सन्धान होगा और विकृत न होने से उत्तम बनेगा।

मधुर द्रव्य

आसवों में मधुर द्रव्यों का प्रयोग गुड़, चीनी या मधु के रुप में होता है। औषधि रुप में इसकी कोई विशेषता नहीं है ये सन्धान द्वारा आसव में मद्य उत्पन्न कर आसव द्रव को चिरकाल तक संरक्षित करते हैं और उसके गुणों को स्थिर रखते हैं। मद्य अपने योगवाही, आशुकारी आदि विशिष्ट गुणों के कारण औषऔषधि के कार्य को बढ़ाता है तथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर में शीघ्र पहुँच कर आशुकारी बनाता है इसके अलावा आसवों में मधुर द्रव्य इसे मधुर पेय का रूप भी प्रदान करते हैं। मधुर द्रव्य छने क्वाथ में शीतल होने पर मिलाये जाने चाहिये।

कई आसवारिष्टों के क्वाथ में मुनक्का या मधुपुष्प होते हैं। ये आसवों को गुण सम्पन्न करने के मुख्य कार्य के साथ साथ मधुर भी बनाते हैं, और सन्धान में भी सहायक होते हैं। मधुर द्रव्य आसव में कब और किस मात्रा में मिलाये जाने चाहिऐं? इस विषय पर भी निर्माता विद्वानों के विचारों में भिन्नता है। कुछ का विचार है कि शास्त्र परम्परा के अनुसार सम्पूर्ण मधुर द्रव्य पूर्ण मात्रा में सन्धान से पूर्व ही मिला दिये जाने चाहियें। दूसरा विचार है कि, कुछ मात्रा स-

योगी अनुभूत सिद्ध योगः—

अर्शीना प्रलेप

उंगली से अच्छी तरह दिन में २ बार मस्सों पर लगावें। इसे दाद, खाज, सभी प्रकार के एग्जीमा तथा मुहांसे (पिम्पलस) आदि त्वचा रोगों में भी तुरन्त आराम मिलता है।

आमलकी रसायन

आयुर्वेद में आमला सबसे अधिक बल, वीर्य वर्धक रसायन है, और यह इसका अच्छा प्रयोग है।

यह एक प्रकार आमले का सत ही है **जिसे कि हरे** पके आमलों के रस की आमला चूर्ण को १०१ भावना देकर इसे बनाया जाता है। इससे शरीर में विटामिन 'सी' कैलशियम तथा लौह धातु की कमी पूरी होती है। जलन दूर कर खूब भूख बढ़ती है व रोटी बढ़िया हजम होती है। जिगर पूरा खून बनाता है, जिससे दिल व दिमाग को शक्ति व ताजगी मिलती है। बच्चों, बूढ़ों, जवानों, गर्भवती स्त्रीयों सभी के लिए समान गुणकारी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्धान से पूर्व और पुन: कुछ सन्धान के मध्य में, इस प्रकार दो तीन बार मिलायी जानी चाहिये। अन्य विचार है कि, सन्धान के बाद भी कुछ मात्रा मधुर द्रव्यों की मिलायी जानी चाहिये। इससे आसव मधुर हो जायेगा और उसमें खटास पैदा होने की सम्भावनायें नहीं रहेंगी।

भिन्न परिस्थियों के अनुरूप तीनों विचार सगत हैं। जिन आसवों में मधुर द्रव्य कम हों, उनमें एक ही बार में मिला देना ठीक रहेगा। जिनमें मधुर द्रव्य अत्यधिक हों, उनमें सन्धान काल में मिठास कम होने पर दो तीन बार में मिलाना चाहिये। और जिन आसवों में सन्धान के पश्चात द्रव्य में मिठास कम रहती है, उनमें सन्धान के पश्चात भी मीठा मिलाया जा सकता है।

वास्तव में उत्तम सन्धान के लिये मधुर द्रव्यों का सन्धान से पूर्व एक बार ही मिला देना ठीक रहता है, जिससे द्रव्य की मिठास २० से २५ प्रतिशत हो जाय। सन्धान के लिये यह उपयुक्ततम मिठास है। इससे ज्यादा या कम होने पर सन्धान तीव्र और उत्तम नहीं होता। हां, यदि किसी आसव विशेष में कुछ परिस्थितियों के कारण सामान्य से ज्यादा मद्योद्गम अभीष्ट हो, तो, सन्धान काल के मध्य में मिठास कम होने पर पुन: और मीठा मिलाया जा सकता है। जिन आसवों में सन्धान के पश्चात मधुरांश १५ से २० प्र० से कम हो जाता है, उनमें आसव को स्वादिष्ट मधुर पेय का रूप प्रदान करने के लिये सन्धान के पश्चात भी मीठा मिलाया जा सकता है। इस सम्पूर्ण कार्य सिद्धि के लिये यदि ग्रन्थ निर्देशानुसार मधुर द्रव्य कम या ज्यादा भी मिलाये जाते हैं, तो आसव में कार्यकारी गुण सम्पन्नता की दृष्टि से कोई विशेष अन्तर नहीं आता।

मधु के विषय में उल्लेखनीय बात यह है—कि यदि मधु शुद्ध उत्तम हो, तभी मिलाया जाना चाहिये। लेकिन प्राय: इतनी बृहद् मात्रा में शुद्ध मधु प्राप्त कर पाना सम्भव नहीं हो पाता। अत: जितना मधु प्राप्त हो, मिला दें और शेष के अभाव में उत्तम गुड़ या चीनी का प्रयोग करना चाहिये। गुड़ मलिनता रहित स्वच्छ, खटास या नमकीन स्वाद रहित उत्तम प्रकार का लेना चाहिये। कुछ विद्वानों के विचारों के अनुसार उत्तम आसव निर्माण के लिये सभी आसवों में केवल चीनी का ही प्रयोग किया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना चाहिये। इससे आसव स्वच्छ, सुन्दर पारदर्शक और सुस्वादु बनेगा। लेकिन देखा गया है, कि गुड़ से सन्धान उत्तम होता है क्योंकि उसमें मद्योद्‌गम के लिये प्रथम श्रेणी की शर्करा की मात्रा ज्यादा होती है तथा यह अपेक्षाकृत एक सस्ता शास्त्र सम्मत प्राकृतिक मधुर द्रव्य है। आधुनिक तरीकों से चीनी के निर्माण में स्वच्छता के लिये जिन क्षारीय द्रव्यों का प्रयोग होता है, आयुर्वेद मतानुसार इससे चीनी के सतर्पण-शील-मधुर आदि गुणों की हानि होती है।

मोटे अनुमान के अनुसार आसवों में मधुर द्रव्य अवशेष जल से आधा मिलाना पर्याप्त रहता है। चौथाई से कम नहीं मिलाया जाना चाहिये और विशेष परिस्थितियों में पौना मिलाया जा सकता है, परन्तु इससे ज्यादा नहीं मिलाना चाहिये।

प्रक्षेप द्रव्य

इसमें अपेक्षाकृत अल्प मात्रा में कुछ द्रव्य होते हैं, जो सन्धान काल से पूर्व या मध्य में आसव में मिलाये जाते हैं। इनका कार्य आसव के मुख्य द्रव्य के गुणों में वृद्धि करना तथा उसके अवगुणों को दूर करना होता है। इसमें प्रायः उड़नशील

क्रमश:

योगी अनुभूत सिद्ध योगः—

केशला पाऊडर

बालों का गिरना, व अल्प समय में सफेद होना आज का एक विशेष रोग है इसके लिए शताब्दियों पुराना यह आयुर्वेदिक प्रयोग बड़ा ही लाभकारी सिद्ध हुआ है।

इसमें आमला, शिकाकाई, भृङ्गराज, श्वेत गुञ्जा, कपूर जैसी दिव्य औषधियों को लिया गया है। २ तोला चूर्ण को रात को पानी में भिगो कर प्रातः नहाने से पहले सिर पर मल कर स्नान करें, इससे कुछ ही दिन में बाल रेशम की तरह मुलायम चमकदार और काले व आकर्षक हो जाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कफसीन

नई व पुरानी खांसी, नजला जुकाम व गले की खराबी की प्रसिद्ध घरेलू दवाई है, इसकी कुछ खुराकें ही पूरा आराम पहुँचाने के लिए काफी हैं, इसे बच्चों की काली खांसी, हिक्का व श्वास रोगों में भी सरलता पूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। दमे व निमोनिया की पहली अवस्था भी दूर हो सकती है।

इसको दिन में तीन बार छोटे चम्मच (५ मि ग्राम) दूध में डाल कर या वैसे ही चांट लेवें।

बालामृत

नन्हें मुन्ने बच्चों के लिए यह अमृत हैं। इसे बच्चे बड़े चाव से पीते हैं, व प्रसन्न हृष्ट-पुष्ट बलवान व निरोग हो जाते हैं।

यह केसर, अतीस, मुनक्का, काकड़ासींगी, पीपल आदि अनेक आयुर्वेदिक दिव्य जड़ी बूटियों के सत निकाल कर बनाया जाता है. जिससे बच्चे के दांत निकालने सम्बन्धी सब रोग जैसे हरे पीले दस्त, उल्टी सूखा रोग, कमजोरी, खून की कमी आदि दूर होते हैं, यह माँ के दूध के समान निर्दोष व गुणकारी है। इसके सेवन से बच्चों का रग सुन्दर व कद बढ़ता है, दांत आसानी से निकलते हैं।

प्रात: सायं एक-एक चम्मच गौ के दूध में मिला कर, या वैसे ही चटावें अथवा चिकित्सक से सलाह लें।

स्वादिष्ट चूर्ण

अत्यन्त स्वादिष्ट, पाचक तथा भोजन में रूची पैदा करने वाला सर्वोत्तम चूर्ण है। इससे पेट दर्द, पेट की गैस व गरीष्ट भोजन को पचाने में भी परम उपयोगी है। खट्टा-मीठा चटपटा है।

इच्छानुसार ३ माशा चूर्ण दिन में एक दो बार चाटें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस रोग विवेचन

मनोविज्ञान और अन्तर्निरीक्षण

डा० इन्द्रसेन

सामान्य मनोविज्ञान की विषयवस्तु वयस्क मानव की चेतना या मन तथा व्यवहार है। व्यवहार का तो हम बाह्य रूप से भी निरीक्षण कर सकते हैं। पर साधारण तौर पर सम्बन्धित व्यक्ति की आंतर चेतना का सूचक एक बाह्य आधार होता है। और इसके पूर्व अन्तर्निरीक्षण की आवश्यकता है अर्थात निरीक्षणकर्त्ता के व्यवहार के उस भाग से सम्बन्धित मानसिक कार्य-पद्धति को सीधे और आन्तरिक पर्यवेक्षण की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये—मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूं कि अमुक-२ अपनी क्रोधित मुखाकृति और बद मुट्ठियों के कारण क्रोधित हैं क्योंकि मैं सीधे अनुभव के द्वारा पहले से जानता हूं कि क्रोध में उस प्रकार के व्यवहार की मेरी प्रवृत्ति रही है या जब मैंने इस तरह से व्यवहार किया मैं आंतरिक रूप से क्रोधित था।

इसलिये मनोविज्ञान की विषय-वस्तु के लिए मानसिक प्रक्रिया, चेतना, ही मूल सत्य है और यही वह है जिसे हम व्यवहार के द्वारा जानने का प्रयत्न करते हैं। और अपनी ही चेतना को व्यक्ति सीधे तौर पर जान सकता है। इसलिए मनोविज्ञान की मुख्य विधि निश्चित रूप से स्वभावत: स्वयं की मानसिक प्रक्रिया का निरीक्षण या अंतनिरिक्षण होनी चाहिए। इसके विपरीत पदार्थविज्ञान, रसायनशास्त्र, वनस्पति-विज्ञान, प्राणिविज्ञान आदि का निरीक्षण बाह्य निरीक्षण होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल अन्तर्निरीक्षण की पद्धति में बहुत सी कठिनाइयां हैं। वह एक व्यक्ति के द्वारा स्वयं की मानसिक क्रिया का निरीक्षण है। यह वनस्पतिशास्त्री या प्राणिशास्त्रियों के द्वारा किये गये वनस्पति या या प्राणियों के निरीक्षण की तरह का नहीं हैं। साथ ही, मानसिक प्रतिक्रिया चचल है और यह संभव नहीं कि इसे स्थिर किया जा सके। इस दृष्टिकोण से अन्तर्निरीक्षण को वैज्ञानिक विधि नहीं माना जा सकता। यद्यपि यह आक्षेप वास्तविक हैं पर अजेय नहीं हैं। प्रथमतः बहुत से मनोवैज्ञानिक समान मानसिक प्रक्रिया का निरीक्षण नहीं कर सकते, यद्यपि वे एक ही प्रकार की मानसिक प्रक्रिया को समान और क्रमशः अभिन्न होती हुई अवस्थाओं में देख सकते हैं। हम अपने नारंगी के प्रत्यक्ष का सूक्ष्म पर्यवेक्षण कर सकते हैं और उसकी तुलना दूसरे के निरीक्षण से करके अपने मतैक्यों और मतभेदों को खोज सकते हैं। इस तरह हम प्रकृति के प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष की जनक अवस्थाओं तक पहुँच सकते हैं। अन्य पद्धतियों में भी यही बात है यद्यपि भावों, सवेदनों, ध्यान, रुचि आदि के अध्ययन में अन्तर्दर्शन के प्रयोग में एक भिन्नता आवश्यक होगी। शीघ्र समाप्त की गई मानसिक प्रक्रिया का गवड़ावलोकन भी अन्तर्निरीक्षण में एक अतिरिक्त वास्तविक सहायक है। आगे जबकि मानसिक प्रक्रियाएँ अत्यन्त चचल है व पूर्णतया निरीक्षण के योग्य नहीं रह जाती हैं अंतर्दर्शन के साधारणीकरण के लिए, वैज्ञानिक दृष्टि से इसे उपयोगी बनाने के लिए निर्वैयक्तिक रागमुक्तता की वृत्ति का विकास करने वालों को एक गभीर अभ्यास, कठिन अनुशासन तथा एक व्यापक सहकारिता की आवश्यकता है। पर जहाँ अन्तर्निरीक्षण बाह्य पर्यवेक्षण से अधिक कठिन है पिछले कि अपेक्षा इसमें एक सुविधा और भी है। इसकी सामग्री या निरीक्ष्य वस्तु सर्वदा मौजूद है, मनोविज्ञान सर्वदा अपने अन्दर ही सपूर्ण वस्तु लिये रहता है, जिसका वह निरीक्षण और पुनर्निरीक्षण कर सकता है पुनः पर्यवेक्षण और जितनी बार चाहे जांच कर सकता है। यह वनस्पति या प्राणिशास्त्री के लिए संभव नहीं है। प्रत्येक दशा में अन्तर्निरीक्षण हमारे मस्तिष्क के अध्ययन और मानसिक दशा के अध्ययन में अनिवार्य है और यही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यक्ष पद्धति भी है। केवल यही मन की प्रकृति और कार्य के विषय में एक स्पष्ट और निश्चित दृष्टि दे सकता है। अन्य विधियाँ जो कि मन की प्रवृत्ति का अध्ययन, व्यवहार तथा वातावरण में पड़ने वाले उसके प्रभाव का अध्ययन करती हैं अपनी अत्युच्च अवस्थाओं में भी अचेतन अंतर्निरीक्षण के निर्णयों को ही अनुमानात्मक हैं।

पाश्चात्य मनोविज्ञान के इतिहास में एक समय था जब कि अंतर्निरीक्षण का आरामकुर्सी-विधि (Armchair's method) से प्रयोग किया जाता था। पर बाद में इसे प्रयोगात्मक रूप देने की खोज की गई। इसे सर्वोत्तम निश्चित स्थितियों के पर्यवेक्षण का स्वरूप प्रदान किया गया। वुण्ड (Wound) ने इसे संवेदना के अध्ययन के लिए, जी० ई० मुलर ने इसे स्मृति के लिये और कुल्प ने चिन्तन के अध्ययन में प्रयुक्त किया। और इन अध्ययनों ने नये तथ्यों को उपस्थित किया जो कि विषयगत पद्धतियों की समझ के पूरी तरह बाहर रहे थे, अब विषयगत विधियाँ पाश्चात्य मनोविज्ञान में अधिक शक्तिशाली हैं, यद्यपि ऐसे भी मनोवैज्ञानिक हैं जिनका निश्चय है कि अन्तर्निरीक्षण ही मनोविज्ञान को अवदान दे सकता है।

भारतीय और पूर्वी मनोविज्ञान चिंतन और अभ्यास में अंतर्निरीक्षण स्पष्ट तौर पर एक प्रमुख विधि के रूप में हैं। और बहुत प्रयत्न साध्य और दीर्घ अभ्यास की आवश्यकता है। क्या इसका कारण यह था कि विश्व के इस भाग में मानव-व्यक्तित्व की मूल प्रकृति तथा उसे महान् नैतिक और आध्यात्मिक शिखरों तक ऊँचे उठाने की शक्ति के सम्बन्ध में स्पष्टता और निश्चितता विद्यमान है।

हमारा बाह्य का ज्ञान मुख्यतया इन्द्रियों के द्वारा इसके बोध पर ही आश्रित है। हम वस्तुओं को देखते, सुनते, चखते, सूंघते हैं और उन्हें जानना सीखते हैं। इसी पद्धति को प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। किन्तु जब बच्चा बड़ा होता है तो वह अपने पास के विश्व को और अधिक देखने लगता है, वे वस्तुएं जो विभिन्न प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रियाओं में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समान हैं, वे वस्तुएँ अपनी-अपनी तीव्र बाधा या कठिनाइयों के गुण के कारण उसकी चेतना में स्पष्ट एवं प्रत्यक्षीकरण के अपने विभिन्न क्षेत्रों में अपना अस्तित्व बनाती चली जाती है और मन में उनको प्रथम स्थान दिया जाने लगता है। इस तरह दूध की बात भी है जिसे (दूध को) शिशु ने अपने अनुभवों के क्रम में अनुभूत किया है। और कार्य, भूख, रोना, माँ, संतोष ये अलग-अलग मस्तिष्क में स्थापन के लिए आते हैं जब कि भूख, माँ और रोना वहाँ होते हैं पर दूध नहीं आता। तब शिशु का एक स्वतन्त्र विचार हो जाता है और इसके द्वारा वह वस्तु से स्वतन्त्र और वस्तु के साधारण बाह्य संवेदन से स्वतन्त्र अनुभूति को प्राप्त करने के योग्य बन जाता है। जैसे-जैसे ये स्वतन्त्र विचार विकासोन्मुख मनुष्य में उन्नति करते हैं वह उन्हें एक प्रणाली या शृंखला में प्रयोग करने योग्य हो जाता है। दूसरे शब्दों में ज्ञानेन्द्रियों से वस्तु को जानने के बजाय वह इनके बारे में चिंतन या विचारों के द्वारा इनसे व्यवहार करने योग्य हो जाता है। विचारों को पुनर्निमित प्रत्यक्ष भी कहा गया है। अधिक सत्य तो यह होगा कि ये विचार सजीव या सांकेतिक प्रतिमाएँ हैं तथा ये वह अर्थ भी है जिसे इन वस्तुओं ने हमारे अनुभव में प्राप्त कर लिया है। ये प्रत्यक्ष इन्द्रियबद्ध हो जाता है, पर विचार उन वस्तुओं से जिनका हमें तुरंत बोध हो जाता है निश्चित नहीं होते। इसलिए हम भूत, भविष्य, और सुदूरवर्त्ती वस्तुओं के बारे में सोच सकते हैं। और इसी के द्वारा हमारे दर्शन, धर्म, विज्ञान का जन्म होता है; वास्तव में पूरे सांस्कृतिक जीवन और ज्ञानसंपदाओं का जन्म होता है। इसलिए सोचने की शक्ति ही मानव के विशेषाधिकार के बाते निश्चित है। जिसके बिना पशु बराबर प्राकृतिक जीवन बिताते हैं पर संस्कृति के विकास की शक्ति उनमें नहीं है।

विचार अपने सूचक प्रत्यक्षों से अधिक साधारण होते हैं पर उनमें साधारणता या सूक्ष्मता के अनुसार विभिन्नता होती है। विज्ञान और दर्शन के अंतिम विचार बहुत ही सर्वभौम हैं जहाँ वे दैनन्दिन कार्य-क्रम-सम्बन्धी विचार ऐसे नहीं होते और अधिक सार्वभौम विचारों के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ व्यवहार करने की शक्ति चिंतन की उच्चतर शक्ति का प्रमाण है।

स्मृति प्रतिमा

जब मैं नारंगी देखता हूं और उसके प्रति सचेत होता हूं तो मुझे उसका प्रत्यक्ष होता है और यदि मैं अपनी आंखें बन्द करूं और अन्दर ही नारंगी देखने का प्रयत्न करूं और मान लूं कि मैं इसका आकार और रंग देख रहा हूं तो मुझमें इनकी एक प्रतिमा, एक चाक्षुष प्रतिमा बनती है। इसी तरह सुने हुए संगीत का, स्पर्श का, स्वाद का और अन्य संवेदनों और प्रत्यक्षों की स्मृति-प्रतिमा को धारण कर सकता हूं। ये स्मृति-प्रतिमाएँ श्रवण, स्पर्श, स्वाद, गंध विषयक और मांसपेशियों के आंदोलन-सम्बन्धी, कौशल-सम्बन्धी या स्नायविक भी हो सकती है। इन प्रतिमाओं का स्वरूप प्रतीकात्मक भी हो सकता है और नारंगी देखने के बजाय मैं अन्दर ही अन्दर 'नारंगी' शब्द या इसका दूसरा कोई प्रतिनिधि-स्वरूप शब्द दे सकता हूं। वयस्क जीवन में स्मृतिप्रतिमाएँ अधिकांश में प्रतीकात्मक बनने लगती हैं।

योगी अनुभूत सिद्ध योग—

ब्राह्मी आमला तेल

दैनिक प्रयोग के लिए सर्वविदित योगी 'ब्राह्मी आमला तेल' ब्राह्मी चन्दन आमला आदि शीतल व मस्तिष्क के लिये बल वर्धक आयुर्वेदिक औषधियों को शुद्ध तिली के तेल में संस्कारित कर बनाया गया है। इसके सेवन से बाल नहीं झड़ते, मस्तिष्क ठंडा रहता है, सिरदर्द गर्मी के कारण नकसीर रोकने आदि में भी लाभकारी है। इसकी भीनी-२ मधुर सुगन्ध का अपना एक आकर्षण है। पूरे परिवार के लिये एक आदर्श केश तेल है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर स्मृति-प्रतिमाएँ कैसे प्रत्यक्ष से अपना भेद रखती हैं। यह देखना रोचक होगा। स्मृति-प्रतिमा एक आंतरिक तथ्य है। वह अतिरिक्त इच्छा और ध्यान पर निर्भर करती है। इसलिए यह अन्दर नियंत्रित की की जा सकती है। दूसरी तरफ, प्रत्यक्ष बाह्य रूप से निर्धारित होता है और तत्काल की प्राप्ति स्थिति से सबद्ध स्मृति-प्रतिमा में साधारण तौर पर सम्बन्धित प्रत्यक्ष जैसी तीव्रता नहीं होती, न यह उतनी स्थायी है पर इसे आंदोलन और नियंत्रण की स्वतन्त्रता है और यह भूत की वस्तुओं तथा भविष्य की वस्तु या जो बहुत दूर है उनको प्रतिमूर्त कर सकती है।

श्री धर्मदत्त वैद्य संग्रह

स्मृति-प्रतिमा हमारे मानसिक जीवन के बहुत बड़े भाग का निर्माण करती है। बच्चे में एक पूरी अवस्था ही ऐसी होती है कि वह परियों की कहानियाँ पसंद करता है। वह प्रकृति से ही अपनी मनपसंद प्रतिमाओं के जगत् में रहना पसंद करता है जो उसे बिल्कुल सत्य मालूम होती है। युवक अपने दिवा स्वप्न में अपने को जीवन के एक या दूसरी महान और महत्त्वपूर्ण भूमिका में भाग लेना कल्पित करता है। प्रौढ़ अपने सर्वजनात्मक कार्यों में चाहे वे कला, विज्ञान, दर्शन या व्यावहारिक जीवन क्यों न हों अपनी कल्पना का प्रयोग करता है। ये स्मृति-प्रतिमाओं के स्वरूप व्यापार हैं पर कभी-कभी वे बाध्य रूप से और यंत्रवत् पुनः पुनः परिचालित होते जाते हैं, जैसे उन्माद के रोग में वे अस्वस्थ रूप धारण कर लेते हैं।

04688

स्मृति-प्रतिमाएँ प्रतिनिर्माणात्मक या निर्माणात्मक होती हैं। जब वे भूत के अनुभव का वर्णन करती हैं। तो प्रतिनिर्माणात्मक होती हैं, उदाहरणार्थ, जब मैं भूत के सुखपूर्ण समय की स्थितियों में अपने अन्दर ही रहता हूं और जब वे किसी नये अनुभव को उपस्थित करती रहती हैं तो वे निर्माणात्मक होती हैं, उदाहरणार्थ जब मैं एक नराश्व को देखता हूं तो ऐसे अनुभवों में मिश्रण ही नये हैं, विषय-वस्तु पुराने अनुभवों से ही ली गई है। स्मृति-प्रतिमा की निर्माणात्मक कार्य-शक्ति वयस्क की सर्जनात्मक क्षमता का निर्माण करती है और अपने में सूक्ष्मता से सारी प्रतिमाओं के व्यवहार का निरीक्षण करने से इसे काफी वर्द्धित और उन्नत किया जा सकता है। यह चिन्तन से भी बहुत अधिक सम्बन्धित है और इससे चिन्तन-शक्ति भी बढ़ती है।

(कल्पवृक्ष से साभार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दन्त शोधक

दारचीनी, माजूफल, रूमी मस्तगी. असली अकरकरा, नीम छाल, कपूर, आदि वनस्पति के योग से बना हमारा यह मंजन दांतों व मसूढ़ों से खून आना, दतशूल, दांतों में ठंडा पानी लगना, दांतों का हिलना, तथा मुख से पस आने की चिकित्सा के लिए पूर्ण भरोसे की दवा है। इसके रोजाना के प्रयोग से कभी भी मुख व दाँतों का रोग नहीं हो सकता। दांत मोती के समान चमकदार व मुख से सारा दिन इसी की गन्ध आती रहती है। भारत में ही नही फीजी, लका, मारीशस व मलाया जैसे देशों में भी आज इसकी माग है। घर में सभी परिवार वासियों के दाँतों व मसूढ़ों की रक्षा के लिए सरल चिकित्सक व समझदार गृहस्थी इसी की सिफारिश करते हैं।

प्रात: सायं ब्रुश अथवा अंगुली से दांतों व मसूढ़ों पर मलें, व कुल्ला करें।

योगी चाय

ब्राह्मी, तुलसी, दालचीनी, गुलबनक्शा, लौंग आदि हिमालय की ताजी जड़ी बूटियों के योग से इसे तैयार किया गया है। जो कि चाय की तरह स्वाद व परम गुणकारी है, पर चाय की तरह शरीर को इसका अमल नहीं लग सकता और न ही यह नुकसान ही पहुँचा सकती है।

यह शारीरिक शक्ति को बढ़ा कर आलस्य को दूर भगा काम करने के लिए सदा प्रोत्साहन देती है. इसके सेवन से खाँसी जुकाम, बुखार, सरदर्द नहीं होते अगर हों तो भी ठीक हो जाते हैं।

चाय की तरह १५ ग्राम चाय को एक लीटर पानी में उबाल कर दूध चीनी इच्छानुसार मिला कर पीयें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदामृतं सर्वं गधौषधं नः

हमारे लिये वेदामृत समस्त रोगों की औषधि है।

विनय

पं० अभयदेव विद्यालंकार
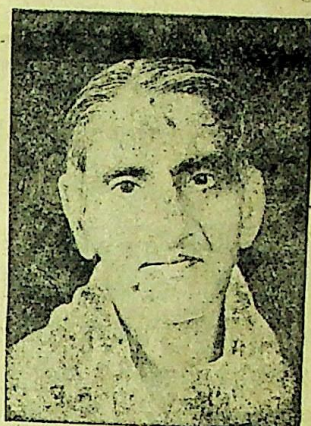
अव मा पाप्मन् वशी सन् मृडयासि नः।
आ मा भद्रस्य लोके पाप्मन् धेहि अविह्नुतन् ॥

अ० ६. २६. १ ॥

हे पाप ! तू अब मुझे छोड़ दे। तूने मुझे बहुत देर अपने वश में रखा, अब तो मेरा तुझे वश में करने का समय आगया है। तेरे वशीभूत होकर मैंने बहुत दुःख पाये, अब तो मेरा सुख पाने का समय आगया है। हे पाप ! तुझ से पाये दुःख ही अब मेरे सुख के कारण हो जावें। यह तो ईश्वरीय नियम है कि दुःख के बाद सुख आते हैं और पाप की प्रतिक्रिया में पुण्य का प्रादुर्भाव होता है। अब तो उस प्रतिक्रिया का समय आ गया है। तुझ से दुःख पा पाकर आज मैं सीधा हो गया हूं, अकुटिल हो गया हूं। मेरे सब कुटिलता, टेढ़ापन, झूठ, पाखण्ड तुझ पाप की तरफ ले जाने वाले थे। पर आज अकुटिल, सरल, सीधा, सच्चा होकर तो मैं अब भद्र के लोक की तरफ चल पड़ा हूं। हे पाप ! यदि मैं तुझ में ग्रस्त होकर इतना न भटकता, इतना दुःख न पाता तो मैं कभी भी कुटिलता की, असत्य जीवन की बुराई को अनुभव न कर पाता और कभी पुण्य का सच्चा पुजारी न बन सकता। इस तरह हे पाप ! तू ही आज मुझे भद्र के लोक में स्थापित कर रहा है। हे पाप ! तू अब अकुटिल हुये मुझे कल्याण के लोक में पहुंचा दे, मैं जितना पक्का बेशर्म पापी था उतना ही कट्टर दृढ़ सच्चा पुण्यात्मा मुझे बनादे, जितना ही गहरा मैं पाप के गर्त्त में गया हुआ था उतना ही ऊँचा तू मुझे पुण्य के लोक में स्थिर कर दे। ***

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

हृदय-परिवर्तन

वैद्य भागेन्द्र सिंह ठाकुर G.A.M.S.
मेलठी, शिमला हिल्स (हि०प्र०)

डाक्टर रमेश चन्द्र गुप्ता 'क' नगर के प्रख्यात चिकित्सक थे। दूर-दूर तक उनकी प्रसिद्धि फैली हुई थी। यही कारण था कि उनके चिकित्सालय में रोगियों की बहुत भीड़ रहती थी अपने कालेज जीवन में जब डाक्टर साहब दूसरे डाक्टरों के पास अपनी मोटर-कारें, स्कूटर, मोटर साईकिल तथा भव्य कोठियां देखते तो वे कल्पना लोक में खो जाते थे। अन्य डाक्टरों के समान उनकी भी यही महत्वाकांक्षा थी कि अपने पास भी कभी ऐसी ही कारें होंगी, रहने को सुन्दर आलीशान बंगला होगा और नौकर चाकर होंगे। सम्भवतः अपनी इसी कल्पना को साकार बनाने के लिये उन्हें कठोर हृदय बना दिया था। लेकिन अपने व्यवसाय में वह इतने कार्य कुशल थे कि जिस रोगी के विषय में 'क' नगर के डाक्टरों ने निर्णय दे दिया होता कि यह रोगी अब बचेगा नहीं। उस रोगी के लिये यदि वह कहते कि यह बच जायेगा तो रोगी फिर काल के मुख में नहीं जा सकता था। उनका सारा अध्ययन ज्ञान, चिकित्सा, अनुभव उस रोगी के प्रति जागरूक हो उठता था। लोगों की भारी भीड़ इसी की परिचायक थी।

एक दिन सायं काल के समय डाक्टर साहब अभी चिकित्सालय से लौट कर विश्राम कर ही रहे थे। इतने में दरवाजे की काल-बैल बज उठी सोचा-कोई परिचित व्यक्ति होगा। दरवाजा खोला और देखा कि दरवाजे पर एक प्रौढ़ वय का व्यक्ति खड़ा है। कृश शरीर, मुख पर दीनता के से भाव थे। ऐनक लगी हुई थी। इससे पूर्व उन्होने उसे देखा नहीं था। न जाने क्यों, सहसा डाक्टर साहब के मुख पर कठोरता के भाव उत्पन्न हो गये। उस प्रौढ़ व्यक्ति की ओर उपेक्षा के भाव से देखते हुए बोले- "क्या बात है बाबा ? किसलिए आए हो" ?

"ज.. ज.. जी डाक्टर साहब ! बात यह है कि मेरे एक ही लड़का है, उसे सख्त बुखार है। सारा बदन ऐसे तप रहा है, जैसे वह भट्ठी में डाल दिया गया हो। आप चल कर देख लीजीए"।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कल डिस्पैंसरी में ले आना। अभी मैं नहीं चल सकता।"

"नहीं...नहीं...डाक्टर— साहब! आपको चलना ही पड़ेगा। एक बार देख लीजिए.........मेरा सहारा वही है। बड़ी कृपा होगी।"

"अरे......चल; परे हट......एक बार तुझे कह तो दिया। मैं कहीं नहीं जाऊँगा।"

इस पर वह व्यक्ति डाक्टर साहब के पैरों पर गिर पड़ा और रोते हुए कहने लगा

"डॉक्टर साहिब! आप एक बार तो चल पड़िए। नगर के सारे डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है। अब आप ही मेरा सहारा हैं।

डॉक्टर साहब ने उससे पैर छुड़ाने की बहुतेरी कोशिश की; लेकिन उस प्रौढ़ ने डॉक्टर साहब के पैर इस प्रकार से कस कर पकड़ रखे थे कि छुड़ाए नहीं छूट रहे थे। डॉक्टर के मुख पर असमञ्जस के भाव उत्पन्न हो गए; फिर भी मन में बडप्पन का भाव था; बोले—"जानता है; मेरी फीस क्या है? दो सौ रुपये लूँगा। दे सकेगा? बोलो!!

प्रौढ़ व्यक्ति ने दृष्टि उठाई; एक क्षण डॉक्टर साहब के मुख की की ओर देखा; फिर बोला—

"आपकी फीस मेरे पुत्र से बढ़कर नहीं है! आप चलिए तो सही। मैं दो सौ के बजाय तीन सौ दूंगा।"

डॉक्टर रमेश अनिच्छा के साथ उठे। अपना बैग उस प्रौढ व्यक्ति के हाथ में पकड़ा दिया। प्रौढ़ व्यक्ति अपना सिर झुकाए आगे-२ चल रहा था और डाक्टर साहब मन ही मन उसे कोसते हुए उसका अनुसरण कर रहे थे। चिकित्सालय से लगभग आधा मील की दूरी पर उस प्रौढ़ व्यक्ति का आलीशान भवन था। रोगी के पास पहुंचे। लगभग तेरह वर्ष की आयु का ज्योति क्षीण हो रही थी। नाड़ी परीक्षा की। श्वास लेने में बहुत कठिनाई हो रही थी। ज्वर १०५°F था स्टैथेस्कोप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से छाती की परीक्षा की अरे......इसे तो डबल न्यूमोनिया है। बचने की सम्भावना बहुत कम थी। डाक्टर साहब ने दृष्टि उठाई; बालक का पिता उन्हीं की ओर देख रहा था। उसके मुख पर आशा-निराशा के भाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहे थे। तभी डॉक्टर रमेशचन्द्र के मन में कौंधा—"यह निरीह बालक क्या मेरे देखते ही देखते प्राण छोड़ देगा? नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। माना कि डॉक्टर प्रकृति के विधान को नहीं बदल सकता; लेकिन अन्तिम क्षण तक प्रयत्न करना ही डॉक्टर का कर्त्तव्य होता है। यदि मैं इसे नहीं बचा सका; तो मेरा अब तक का चिकित्सा ज्ञान अधूरा ही रहेगा। कॉलेज में अध्ययन करते हुए उन्होंने कहीं पढ़ा था—Doct treats the pateint only, God cures him.

(डॉक्टर रोगी की केवल चिकित्सा ही करता है। परन्तु आरोग्य-लाभ ईश्वर ही प्रदान करता है)

तुरन्त ही उनका सारा ध्यान उस बालक में एकाग्र हो गया। 'कर्त्तव्य............की भावना उनके अचेतन मस्तिष्क में हृदय की प्रत्येक धड़कन के साथ गूंजने लगी! उन्हें प्रतीत हो रहा था कि बालक के नेत्रों की ज्योति सीधे उनके अन्तःकरण पर प्रहार कर रही है। मानो कह रहा हो डॉक्टर साहब मुझे बचा लीजिए मैं अभी मरना नहीं चाहता। डाक्टर साहब प्राणपण से रोगी की चिकित्सा में जुट गए। उसी में वह इतने तल्लीन हो गए कि समय का भी होश नहीं रहा।

अन्त में उनका श्रम सार्थक हो गया। तीन घन्टे के अथक परि-श्रम से बालक मृत्युद्वार से वापिस लौट आया। डॉक्टर रमेशचन्द्र को प्रतीत हुआ कि उनके मस्तिष्क में एक अलौकिक सा आनन्द छा गया है। आत्मा-परमात्मा के सम्मिलन की रात उन्होंने भारतीय योग दर्शन में पढ़ी ही थी। लेकिन आज उन्हें इसकी साक्षात अनुभूति सी हो रही थी। प्रौढ़ सज्जन ने; जो एक अवकाश प्राप्त मैजिस्ट्रेट थे; डॉक्टर साहब को कृतज्ञता सहित पान्च सौ रुपये भेंट किए। लेकिन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बार आग्रह करने के बाद भी उन्होंने वे लौटा दिए तथा कहा—

"मुझे आज मेरा पथ मिल गया है। मैं बहुत दिनों तक लक्ष्यहीन सा मृगतृष्णा के जाल में भटक रहा था; लेकिन आज मुझे मार्ग मिल गया है। इतना कहकर डॉक्टर रमेश चन्द गुप्ता फिर उस आनन्द में डूब गए।

॥ ॐ श्री हरिः ॥

योगी अनुभूत सिद्ध योग—

योगी रसायन

(ब्राह्मी रसायन)

दिमागी काम करने वाले विद्वानों वकीलों, डाक्टरों और विद्यार्थी व अध्यापकों ने हमारी इस भेंट को खूब सराहा है। यह मस्तिष्क को बल देकर स्मरण शक्ति को बढ़ाती है, दिमाग को तरो व ताजा रखती है, पूरी नींद लाकर चिंता, भ्रम व हाई ब्लडप्रेशर को ठीक करती है, सन्यासी महात्माओं को सतोगुणी प्रवृत्ति प्रदान करने में सहायक है। जिससे वह समाधि ध्यानादि में बैठ सकें। युवा अवस्था में विद्यार्थियों में पाये जाने वाले स्वपन दोष आदि विकारों को दूर कर सारे शरीर व आतमा को सबल बनाने के लिए ब्राह्मी व शंख पुष्पी के स्वरस हरे पके आमले, हरड़ तथा शुद्ध घृत आदि से बना यह रसायन एक दिन के बच्चे से १०० वर्ष तक के वृद्ध सभी के लिए समान उपयोगी है एक बार परीक्षा करें।

१० ग्राम योगी रसायन, प्रातः सायं दूध के साथ लें अथवा चिकित्सक से सलाह लेवें छोटे बालकों को आधी मात्रा देनी चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अधिकार कहां मुझको.."

प्रिये ! अधिकार कहां मुझको,
तेरा शृंगार करूं मैं...
तेरे सुन्दर हृदय में,
कभी-कभी अभिसार करूं मैं...

प्रकृति के कण-कण को गुंजित किया
तेरी स्वर लहरियों ने, जग भ्रमित किया
पर अधिकार कहां मुझको,
तेरे मधुर स्वरों का श्रवण करूं मैं
तेरे निर्मल हृदय में,
कभी-कभी अभिसार करूं मैं...

सागर की लहरों के कल-कल में,
ढूंढ रहा तेरे पग की छुन-छुन मैं
पर अधिकार कहां मुझको
वह छनक कभी सुन पाऊं मैं
तेरे चंचल हृदय में,
कभी-कभी अभिसार करूं मैं...

तेरी दृष्टि से मधुवन और निखरा
कली-कली पर प्रीत भरा रंग बिखरा
पर अधिकार कहां मुझको
उस दृष्टि को प्यार करूं मैं
तेरे स्नेही हृदय में,
कभी-कभी अभिसार करूं मैं...

-प्रेम प्रताप-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे अनुभव
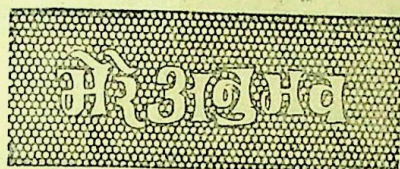
वैद्य बूडीराम

अपने जीवन के ९४ वर्षों में सन्त महात्माओं, विद्वानों वैद्य, हकीमों, शास्त्रों से प्रसाद रूप जो भी मुझे प्राप्त हुआ है उसे जन-कल्याणार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं।

शरीर के सारतम धातु ओज (वीर्य) के द्वारा ही सम्पूर्ण शरीर में बल, कार्य करने की शक्ति, मानसिक उत्साह आदि रहते हैं। वस्तुत: वह प्राण शक्ति है। इसके आधार पर शरीर चलता है। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे दीपक में तैल—और यदि जीवन रूपी दीपक में यह तैल कम हो जाय तो यह भी डगमगाने लगता है। इसी को वृद्धा अवस्था कहते हैं। आयुर्वेद शास्त्र में हमारे ऋषि मुनियों ने ऋतु के अनुसार शरीर को पुष्ट करने हेतु एवं आयु को दीर्घ करने हेतु अलग-२ समय अवस्था एवं औषधियों की व्यवस्था जीवन के चारों आश्रमों के अन्तर्गत की है। यदि हम आयुर्वेद शास्त्र के आदेशानुसार अपने जीवन को चलायें तो निश्चय ही हम वेद के द्वारा निर्देशित सौ वर्ष की आयु प्राप्त कर सकते है इसके लिए शीत ऋतु में आयुर्वेद ने सेवन करने हेतु जिस पाद का वर्णन किया है, वह 'रसायन' है। इस रस-।-आयन का तात्पर्य रस या सार के अयन अर्थात प्रयुओं एवं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणुओं को संस्कारित कर निर्माण करना है। जितना रस शरीर में अधिक होगा उतना ही रक्त आदि धातुओं का अधिक निर्माण स्वाभाविक है। अतः जो वृद्धावस्था या अस्वाभाविक मृत्यु से शरीर की रक्षा करें वह रसायन है।

रसायन को सेवन करने का अधिकार जीवन की प्रत्येक अवस्था में है। आश्रम व्यवस्था के अनुसार जीवन के प्रथम पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम के होते हैं। उन १५ वर्षों में जीवन में स्वभाविक तेज उत्साह, बल के सार वीर्य का स्वाभाविक निर्माण जोरों पर होता है। इसी से यह वृद्धि काल कहलाता है। इस काल में चरक ने सर्वोत्तम जिस रसायन को सेवन करनेका निर्देश दिया है, वह 'आचार रसायन' है। ब्रह्मचर्य के कठिन व्रत का पालन करते हुए सतोगुणी वृद्धि कारक भोजन एवं परिश्रम के साथ आचार रसायन का मौलिक सम्बन्ध है। इस काल में स्वाभाविक वीर्य का निर्माण तेजी से होता है। अतः जीवन के प्रथम २५ वर्षों में इस प्रकार के रसायनों का उपयोग करना चाहिए जिससे कि अथाह वीर्य का समुद्र शरीर का अंग बन सके तथा शेष जीवन के २५ वर्ष अथवा अगले आने वाले आश्रमों में भी जीवन निरोग एवं निर्वाध गति से चलायमान रहे।

यह विद्याध्यन का काल माना है। इस समय भारत की प्राचीन शिक्षा एवं संस्कृति का आज की शिक्षा पर कुछ भी प्रभाव नहीं रहा है। अतः आज की कथित आधुनिक शिक्षा के कारण तामसिक वृत्तियाँ और स्वप्न दोष, प्रमेह, आदि अस्वाभाविक रोग हो जाया करते है। विद्यार्थी स्वय भी कुसंगत में पड़कर स्वयं शरीर के सार को नष्ट करते रहते हैं। और फिर जीवन भर जवानी को तरसते रहते हैं। न उनमें गृहस्थ का सच्चा आनन्द प्राप्त करने की शक्ति ही रह जाती है और न वे बलवान व निरोग सन्तान को ही जन्म दे पाते हैं। इस प्रकार के रोगियों के लिए नीचे लिखा यह प्रयोग सर्वोत्तम है। इससे मैंने अपने जीवन में न जाने कितने ही ऐसे बच्चों को ठीक किया है, जो कि कुसंगत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण अपने वीर्य, बल, उत्साह, को खो चुके थे और जीवन से बिलकुल निराश हो चुके थे। इसके सेवन से स्वप्न दोष, व धातु विकार नष्ट होकर शरीर में वीर्य के नये कणों का निर्माण होता है। बल, उत्साह, स्मरण-शक्ति व स्फूर्ति की वृद्धि होती है।

योग:— (१) सफेद मूसली
(२) सालभ मिशरी
(३) गोंद कीकर असली
(४) शीतल चीनी

उपर्युक्त सभी द्रव्यों को समान मात्रा में लेकर चूर्ण कर लेंवे तथा इस चूर्ण का सोलहवाँ भाग निम्न औषधियों को इस चूर्ण में मिश्रित कर लें। तथा इस चूर्ण की तीन माशा मात्रा दूध के साथ नियमित प्रातः सेवन करें। तो उपर्युक्त सभी रोग जड़-मूल से नष्ट होकर मनुष्य स्वस्थ व निरोग हो जाता है।

(१) लोबान सत्त्व
(२) बंग भस्म
(३) वट (बरगद का दूध

बरगद का दूध उसके हरे पत्तों को अथवा कोंपलों को तोड़ने पर बून्द-बून्द रूप में प्राप्त होता है।

मान लिजिए उपर्युक्त योग (मूसली आदि) का वजन ५०० ग्राम है तो बाद के तीनों द्रव्य ११-११ ग्राम अर्थात कुल ३३ ग्राम लेने चाहिए। वैसे इस योग को योगी फार्मेसी 'सफूफ रसायन' के नाम से निर्माण करती है।

निश्चय ही यह योग अपने आप में एक पूर्ण योग है।

शोधित हरड़े

हरड़ उत्तम रसायन है और इसे जामुन का सिरका, पीपल व लवण आदि के द्वारा जायकेदार बनाया गया है।

एक-एक या दो-दो हरड़े दिन में दो तीन बार चूसें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Life's Drudgery

Life—
got and spent
in misery, toil and suffering.
Man—
a victim;
a dumb mute spectator:
to the evils of time,
Allowing it to over rule him.
Having not the strength,
to fight it:
But only—
Having the uncanny calmness,
of enduring it.

Bonani Shome 'Bon,

अच्छे मनुष्य दूसरों के लिए ही जीते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति को परोपकार के लिए अपना बलिदान कर देना चाहिए। .....मैं अपना भला तभी निश्चित कर सकता हूं जब मैं तुम्हारा भला करूं। कोई अन्य मार्ग या अन्य कोई विकल्प नहीं है।

* स्वामी विवेकानन्द

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष सूचना :

हम शीघ्र ही आयुर्वेद के मूर्धन्य विद्वान आचार्य-पं० धर्मदत्त जी वैद्य (भूतपूर्व प्राचार्य आयुर्वेदिक कॉलेज गुरुकुल कांगडी, हरिद्वार) के अभिनन्दन का स्मृति विशेषांक करने की तैयारी में हैं। इसके लिए विद्वान लेखकों व विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपनी सामग्री शीघ्रातिशीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें। यह अंक वास्तव में एक सग्रहणीय अंक होगा।

विशेष आमन्त्रण :

२ फरवरी, शनिवार १९७४ से ६ फरवरी बुद्धवार १९७४ तक योगी फार्मेसी के प्राङ्गण में 'राष्ट्र-सुखार्थ' ऋगवेद परायण यज्ञ, वेदों के मर्मज्ञ आचार्य लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी एम० ए० साहित्य दर्शन न्याय वेदान्ताचार्य, आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की, अध्यक्षता में सम्पन्न होने जा रहा है। आप कार्यक्रमानुसार पधार कर अनुगृहीत करें।

—: कार्य क्रम :—

२ से ५ फरवरी १९७४

प्रति दिन प्रात: ६ से ९	बृहत् यज्ञ एवं उपदेश
,, साय ४ से ५	,, ,, ,,
६ फरवरी, प्रात: ९ बजे	पूर्णाहुति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाश्वत संस्मरण—

एक विचार ग्रहण कर लो। इसी विचार पर अपना जीवन आधारित करो। उसी का चिन्तन करो, उसका ही स्वप्न देखो। उसी के सहारे अपना जीवन व्यतीत करो। अपने मस्तिष्क में, मांस-पेशियों में, स्नायुओं में समस्त शरीर में इसी एक विचार को भर लो—शेष सब विचारों को छोड़ दो। सफलता का यही मार्ग है।

धर्म का सार तत्वों में नहीं है वरन् व्यवहार में है। पूर्ण धर्म है कि हम स्वयं अच्छे बनें एवं शुभ कर्म करें। ईश्वर, ईश्वर चिल्लाने से क्या अर्थ सिद्ध होगा। जो ईश्वर की इच्छानुसार व्यवहार करेगा, उसे ही वह प्राप्त होगा। —स्वामी विवेकानन्द

मनुष्य अंशतः मानसिक और अंशतः पशुवत है। विकासोन्मुख प्रकृति अब विकास के एक महत्वपूर्ण बिन्दु पर पहुँच गयी है। वह मनुष्य को उत्पन्न करके ही रुक जाना नहीं चाहती। वह सृष्टि के उच्चतम प्राणी के रूप में उससे संतुष्ट नहीं है। वह उसे चेतना के एक उच्चतर स्तर पर उठाना चाहती है। मनुष्य और पार्थिव प्रकृति की जड़ता और परिवर्तन के प्रति उनका विरोध ही वर्तमान अव्यवस्था का कारण है। इसका उपचार उच्चतर चेतना में उठाना और उसे अभिव्यक्त करना है।

इस समय मान जाति एक विकासात्मक संकट से गुजर रही है जिसमें उसके भविष्य का चुनाव छिपा है, क्योंकि हम एक ऐसी अवस्था पर पहुँच गये हैं जिसमें कि मानव मन कुछ विशेष दिशाओं में तो अत्यधिक विकसित हो चुका है जब कि अन्य में वह अवरुद्ध और पथ भ्रष्ट है तथा मार्ग नहीं खोज पा रहा है। —श्री अरविन्द

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों से नम्र निवेदन :

आदरणीय पाठकों !

यह तीन मास की लम्बी प्रतीक्षा के बाद सेवा में प्रस्तुत कर पाने के लिये हमें हृदय से दुःख है, पर अभाव की शृंखला में कागज का अभाव प्रमुख रहा है। महगाई के इस युग में सीमित कोष आदि भी इस विवशताओं के कारण पाठक वृन्द क्षमा करेंगे। प्रभु से प्रार्थना है कि वह भविष्य में मेरे देश में सब कुछ सुलभ करावें ताकि सीमित साधकों के द्वारा भी जन-जन की सेवा में हितायु: अपने पुनीत उद्देश्य से पहुँचाई जा सके।

—प्रबन्ध सम्पादक

श्रद्धांजली :

परम आदरणीय द्विवगंत माता जी !

१९ नवम्बर को प्रात: आकाशवाणी से परम श्रद्धेय पूज्यनीय माता जी के इस भौतिक शरीर के निधन का समाचार सुन मन एवं आत्मा को गम्भीरतम् आघात पहुंचा। वास्तव में श्री माँ इस युग की उच्च कोटी की तत्त्ववेता, तपस्वी सिद्ध महापुरुष मनीषी, एवं राष्ट्र-द्रष्टा, देश भक्त श्री अरविन्द आध्यात्मक योग की क्रियात्मक पथ प्रदर्शक रही हैं।

योग एवं आत्मा की अलभय अनुभूतियों को प्रसाद रूपी-साकार में श्री माँ कभी के हिलोरे लेती रही हैं। उनका राष्ट्र एवं जनहित का चिंतन सदा अविश्रणीय है क्यों कि अनुभूतियों के असाधारण मर्म को वह हित के लिए सदा से श्री अरविन्द आश्रम के अंतर राष्ट्रीय शिक्षा एवं आध्यात्म केन्द्र असख्य साधकों को देती रही हैं। ऐसे महान् आध्यात्म नेता का संसार से अंतरध्यान होने से जो अपूणीयं क्षति हुई है। हितायु परिवार श्री माँ के चरण में श्रद्धांजली अर्पित करता है।

डा० विजय कुमार
योगी फार्मेसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध शिलाजीत [मलाई]
सूर्यतापी

हम शिलाजीत पत्थर को बहुत बड़ी मात्रा में सीधा उसके उत्पत्ति स्थान से संग्रह कर विधिवत बड़ी ही मेहनत से शुद्ध करते हैं।

आयुर्वेद में शिलाजीत के अपार गुणों का वर्णन है जो सज्जन किसी भी कारण शिलाजीत से निराश हो गये हों उनसे हमारा विशेष निवेदन है, वह इसे १ बार जरुर सेवन कर।

इसके खाने से सब प्रकार के दर्द मोटापा, प्रमेह, मधु-मेह, डायबटीज पथरी, गुर्दे की सूजन, टूटी हुई हड्डी, खून की कमी व सब प्रकार की कमजोरियों की एक बहुत आजमूदा दवा है। इसको किसी भी चोट लगने पर सूजन व दर्द कम करने के लिए, खून रोकने के लिए, कटे हुए और जले हुए हिस्से में शुद्ध घी में मिलाकर लगाने से तुरन्त आराम मिलता है।

१/४ ग्राम से एक चम्मच दूध में घोल कर पिलावें या चिकित्सक से सलाह करें। चोट मोच, आदि में घी में बराबर मात्रा में मिला कर गर्म-२ मालिश करें।

शिलाजीत वटी

इसी सूखी शिलाजीत की हमने गोलीयाँ भी बना दी हैं। यह एक से दो गोली दिन में २-३ बार दूध या चाय से लेवें या चिकित्सक से परामर्श करें।

नोट:—शुद्ध शिलाजीत हम बहुत बड़ी मात्रा में तैयार करते हैं, जिसे थोक बहुत ही कम मुनाफे पर फार्मेसीयों और वैद्यों हकीमों को सप्लाई किया जाता है।। एक बार इसकी परीक्षा अवश्य करे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैक्सोटैक्स

स्त्री तथा पुरुष दोनों ही जीवन साथियों को गृहस्थ के पूरे सुख, व ज्यादा आनन्द व तृप्ति के लिए यह वरदान है, यह किसी भी कारण से आई मानसिक व शारीरिक दोनों ही प्रकार की निर्बलता को तत्काल दूर सांसारिक सुख की ओर अग्रसर करने में समर्थ है। इससे आलस्य भागता है। चुस्ती व दाम्पत्य जीवन में आकर्षण जागता है यह नये दमपतियों की पहली पसंद है।

इसमें किसी भी प्रकार की कोई ऐसी औषध भी नहीं जो कि शरीर को हानि अथवा कष्ट पहुँचाये यह केशर कस्तूरी, अम्बर, मकरध्वज, मोती, सोना व चाँदी आदि के योग से बना प्रथम श्रेणी का आयुर्वेदिक फार्मूला है।

सैक्सोटैक्स क्रीम

यह एक अनुभूत प्रयोग उन नौ जवान भाईयों के लिए है, जिनको अपने आपको नौ जवान कहते शर्म आती है। जो अपने बचपन अथवा विद्यार्थी काल में किन्हीं गलतीयों के कारण (हस्थ मैथुन, गुदा मैथुन) आदि द्वारा अपना सर्वनाश स्वय कर चुके हैं, ऐसे हताश भाईयों को भरोसे के साथ इसके प्रयोग से स्थाई लाभ हो जाता है।

पुराने जोड़ों के दर्द, रग पट्ठों में आई दुर्बलता हाथ पैरों के कांपने व सूखने में भी इस क्रीम को तिल तेल में मिलाकर मालिश करने से लाभ होता है न्युमोनियाँ व पसली चलने की अवस्था में भी इसकी मालिश स लाभ होता है।

पुरुष दिन में एक बार थोड़ी सी क्रीम को इन्द्री पर मालिश कर ऊपर से पान का पत्ता गर्म कर बांध देवें। ध्यान रहे इसके प्रयोग काल के लग-भग एक सप्ताह में उस स्थान को गीला न करें अथवा चिकित्सक से परामर्श लेवें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैसांतक

पेट की तकलीफों में आराम पहुंचाने वाला हमारा गैसाँतक आपके घर का सच्चा वफादार सेवक या साथी है। इसे आप डाक्टर से कम कभी न समझें, क्योंकि यह पेट की तमाम गड़बड़ियों जैसे गैस कब्ज, पेट का भारीपन, छाती में जलन, पेट दर्द, गैस के कारण दिल व दिमाग का भारीपन, जिगर की खराबी को दूर कर फौरन आराम देता है। इसके सेवन से किसी प्रकार का या कोई भी साईड इफैक्ट नहीं होता।

परोपकारी लोग गांव-२ में इसे पास रखते हैं क्योंकि यह अनेक रोगों का एक इलाज है। १०० वर्ष से भी पुराना आजमूदा यह प्रयोग आप सबके घर में रहना ही चाहिये। जिसने भी एक बार इसका प्रयोग किया वही इसका मुक्ट प्रसंशक बन गया है।

एक-एक ग्राम दिन में २-३ बार अर्क सौंफ, फलरस अथवा पानी से लेवें।

दर्द नाशक

यह सब प्रकार के जोड़ों के दर्द वायु बिकार अधरंग गठिया वाम आदि में परम उपयोगी है। इससे शरीर में ताकत बढ़ती है, कबज दूर होती है। और पुराने वायु के दर्द में स्थाई लाभ मिलता है। यह सारे नरवस सिस्टम को ताकत देता है।

३ माशा चूर्ण प्रातः सायं दूध या रास्ना सप्तक क्वाथ से लेवें या चिकित्सक से परामर्श करें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति विकास

यह प्राकृतिक लौह, कैलशियम और जड़ी बूटीयों के सार विटामिनों का सार है, जिसे बालक, युवा, स्त्री, पुरुष सभी समान रुप से सदा सेवन कर सकते हैं। इसके सेवन से शारीरिक शक्ति का विकास होता है, यह दैनिक खर्च हुई शक्ति को पूरा करता है भूख को बढ़ाता है, थकावट को दूर कर सारे शरीर में नया खून पैदा कर नई चुस्ती, जवानी, बल व वीर्य का सचार करता है, पुरानी खांसी, मानसिक दुर्बलता को शीघ्र दूर कर रग पट्ठों को मजबूत कर सारे शरीर का विकास करता है। जिन बालकों का कद छोटा होता है या वृद्धि रुक जाती है उनको इसके सेवन से काफी बड़ा लाभ होता है। सब प्रकार के जोड़ों के दर्द व अधरंग, लोब्लडप्रेशर, का भी इलाज है।

एक-एक चम्मच शक्ति विकास दोनों समय भोजनोपरान्त समान जल मिलाकर लेवें, या चिकित्सक से सलाह करें।

सफूफ जरयान

जैसा दूध में मक्खन रहता है, वैसे ही शरीर में 'वीर्य' है, इस वीर्य की प्राकृतिक रक्षा ब्रह्मचर्य द्वारा होती है पर जवानी में कुसंगत से, तेज मसाले व दूसरे गर्म चीजों के सेवन से बिद्यार्थीयों को स्वपनदोष, धातु विकार आदि रोग पैदा हो जाते हैं इन सब बिमारियों का एक सही इलाज सफूफ जरयान है। यह शरीर मे नया वीर्य पैदा करता है। दूषित वीर्य को शुद्ध करता है जिससे अंग-२ में आई दुर्बलता नष्ट होता है शरीर निरोग व कान्तीवान हो जाता है। स्मरण शक्ति बढ़ती है मन सत्तोगुणी बिचारों वाला बनता है। इसमें नये वीर्य कणों (शुक्राणुवों) को बढ़ाने व दुर्बलों को बलवान बनाने और रोगीयों को निरोग रखने की शक्ति है।

३ ग्राम चूर्ण को आधे कप दूध में घोल कर खीर सी बनने पर खायें। या चिकित्सक से परामर्श करें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिकोप्लेक्स

स्त्रीयों के लिए सब से बढ़िया, ताकत की दवाओं की श्रेणी में लिकोप्लेक्स सबसे आगे है क्योंकि यह गागर में सागर की तरह, अशोक, लोध्र, कीकर, बट, गूलर, शतावर, मूसली के परम सार धन तत्वों को निकाल कर उसमें लौह, अभ्रक, बंग, चाँदी व सूर्यतापी शिलाजीत मलाई आदि के योग से बनाई गयी है। इसके सेवन से स्त्रीयों को घुन की तरह खा जाने वाला प्रदर या लिकोरिया जड़ मूल से नष्ट होता है नया खून बनता है भूख लगती है, कमर दर्द, आंखों के आगे अंधेरा थकावट आदि नहीं होते जिससे शरीर कान्तिमय, सुन्दर व बलवान बनता है। मासिक धर्म नियमित हो जाता है। जिन माताओं के बच्चे नहीं होते उनको इसके सेवन से मन चाहा फल मिलता है। यदि स्वस्थ माताएं वर्ष में नियमित रुप से लेती रहें तो उनको शतायु प्राप्त हो सकती है।

२-२ गोली प्रात: सायं दूध से, फल स्वरस से लेवें। या चिकित्सक से सलाह लेवें।

शाही चूर्ण

स्वाद व हाजमें के लिए "शाही चूर्ण" अपना विशेष स्थान रखता है इसके सेवन से भूख बढ़ती है गरिष्ट व भारी भोजन भी शीघ्र पचता है, पेट दर्द गैस व अन्य हाजमें सम्बन्धी खराबियाँ भी दूर होती हैं।

उल्टी व जी मिचलाना, दूर होता है। पहाडी व अन्य पानी आदि के कारण होने वाले कष्टो में भी लाभ पहुँचाता है।

घरों में स्त्रीयाँ इसके अत्यन्त रोचक चटपटे स्वाद के कारण सभाल कर रखती हैं। और पानी में घोल जलजीरा बना कर भी पीतीं हैं।

२-३ ग्राम दिन में २-२ बार इच्छानुसार लें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर भारत में पहली बार

योगी फार्मेसी

ने आयातीत जैसा

हिंगुल (शिगरफ)

का सफल निर्माण किया है।

जिसे

* गवर्नमेंट आयुर्वैदिक फार्मेसी यू. पी. (लखनऊ)
* गवर्नमेंट आयुर्वैदिक फार्मेसी, रायपुर (मध्य प्रदेश)
* गवर्नमेंट आयुर्वैदिक फार्मेसी, माजरा, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.)
* वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन
* गुरुकुल कांगड़ी एवं ऋषिकुल आयुर्वैदिक कालेज फार्मेसी

एवं

भारत भर के अनेक विद्वान वैद्यों ने अपने प्रयोग में लिया है

और

सब प्रकार से गुणकारी पाया है।

इसे आप अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त कर सकते हैं।

निर्माता :

योगी फार्मेसी, कनखल हरिद्वार की एक और उत्कृष्ट भेंट।

देहली के वितरक: गर्ग कम्पनी कटराभेद गरान खारी बावली दिल्ली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar